International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

धर्मवीर भारती के 'अंधायुग' में महाभारत के पुनर्पाठ द्वारा आधुनिक समाज की नैतिक एवं दार्शनिक व्याख्या

डॉ. नीरज गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर - हिंदी
गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
कर्वी, चित्रकूट

सारांश
धर्मवीर भारती के नाट्यकाव्य अंधायुग में महाभारत के आख्यान का पुनर्पाठ करते हुए आधुनिक समाज की नैतिक एवं दार्शनिक स्थितियों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। यह कृति महाभारत के युद्धोत्तर परिदृश्य को आधार बनाकर मानव अस्तित्व के संकट, मूल्यहीनता, और नैतिक पतन को उजागर करती है। नाटक में पात्र केवल ऐतिहासिक या पौराणिक नहीं रहते, बल्कि वे आधुनिक समाज की मानसिक प्रवृत्तियों—जैसे हिंसा, प्रतिशोध, अंधता और नैतिक द्वंद्व—के प्रतीक बन जाते हैं। भारती ने युद्ध के विनाशकारी परिणामों के माध्यम से यह दिखाया है कि जब धर्म और नैतिकता का ह्रास होता है, तब समाज "अंधायुग" में प्रवेश कर जाता है। इस प्रकार, यह कृति मिथक और आधुनिकता के समन्वय द्वारा मानव जीवन के गहरे दार्शनिक प्रश्नों—कर्म, नियति और उत्तरदायित्व—की सार्थक व्याख्या करती है।
मुख्य शब्द: अंधायुग, महाभारत, नैतिक संकट, दार्शनिक व्याख्या, आधुनिक समाज

प्रस्तावना
धर्मवीर भारती द्वारा रचित अंधायुग हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण नाट्यकाव्य है, जिसमें महाभारत के आख्यान का पुनर्पाठ करते हुए आधुनिक समाज की नैतिक एवं दार्शनिक जटिलताओं को गहराई से उद्घाटित किया गया है। यह कृति केवल पौराणिक कथा का पुनर्स्मरण नहीं करती, बल्कि उसे आधुनिक संदर्भों—विशेषतः द्वितीय विश्वयुद्ध और भारत-विभाजन की पृष्ठभूमि—में पुनर्स्थापित करती है। 'अंधायुग' का कथानक महाभारत के युद्ध के अंतिम दिन, अर्थात् अठारहवें दिन की संध्या से प्रारंभ होता है, जहाँ विजय और पराजय के बीच खड़ा मानव एक गहरे नैतिक संकट से जूझता दिखाई देता है। इस नाटक में युद्धोत्तर स्थिति को "अंधकार युग" के रूप में चित्रित किया गया है, जो केवल भौतिक विनाश ही नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों, आस्थाओं और नैतिक संरचनाओं के पतन का प्रतीक है। भारती ने महाभारत के पात्रों—अश्वत्थामा, धृतराष्ट्र, गांधारी, संजय और कृष्ण—को नए अर्थों में प्रस्तुत करते हुए उन्हें आधुनिक मानव की मानसिक अवस्थाओं और सामाजिक प्रवृत्तियों का प्रतिनिधि बना दिया है। इस प्रकार, मिथकीय कथा आधुनिक यथार्थ का दर्पण बन जाती है। दार्शनिक स्तर पर यह कृति अस्तित्ववाद, नियति, कर्म और

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

उत्तरदायित्व जैसे प्रश्नों को उठाती है, जहाँ मनुष्य अपने कर्मों के परिणामों से बच नहीं सकता और उसे अपने नैतिक निर्णयों की कीमत चुकानी पड़ती है। साथ ही, 'अंधायुग' यह भी संकेत करता है कि जब समाज में नैतिकता और धर्म का पतन होता है, तब अंधकार अनिवार्य रूप से फैलता है। अतः यह नाटक महाभारत के पुनर्पाठ के माध्यम से आधुनिक समाज के नैतिक संकट, मूल्यहीनता और दार्शनिक दुविधाओं की गहन व्याख्या प्रस्तुत करता है, जो आज के समय में भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी उसके रचना-काल में थी।

अध्ययन का महत्व

धर्मवीर भारती के अंधायुग पर आधारित यह अध्ययन महाभारत के पुनर्पाठ के माध्यम से आधुनिक समाज की नैतिक और दार्शनिक जटिलताओं को समझने में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि मिथकीय आख्यान केवल अतीत की कथा नहीं होते, बल्कि वे वर्तमान सामाजिक यथार्थ को व्याख्यायित करने का सशक्त माध्यम बन सकते हैं। 'अंधायुग' के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि युद्ध, हिंसा, और सत्ता-संघर्ष जैसी प्रवृत्तियाँ आज भी मानव समाज में विद्यमान हैं और वे नैतिक मूल्यों के पतन का कारण बनती हैं। साथ ही, यह अध्ययन आधुनिक मनुष्य के अस्तित्वगत संकट, नैतिक द्वंद्व, और उत्तरदायित्व की भावना को समझने में सहायक है। शैक्षणिक दृष्टि से यह शोध साहित्य, दर्शन और समाजशास्त्र के अंतःविषय संबंधों को भी रेखांकित करता है, जिससे समकालीन सामाजिक समस्याओं के गहन विश्लेषण की संभावनाएँ विकसित होती हैं।

'अंधायुग' का साहित्यिक महत्व

धर्मवीर भारती द्वारा रचित अंधायुग हिंदी साहित्य में एक मील का पत्थर माना जाता है, जो पौराणिक आख्यान और आधुनिक चेतना के सृजनात्मक समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। महाभारत के युद्धोत्तर प्रसंग को आधार बनाकर यह कृति केवल कथा का पुनर्प्रस्तुतीकरण नहीं करती, बल्कि उसे आधुनिक संदर्भों में पुनर्परिभाषित करती है। इसका सबसे बड़ा साहित्यिक महत्व इस बात में निहित है कि यह नाटक परंपरागत नाट्यशैली से हटकर एक काव्य-नाटक (गीतिनाट्य) के रूप में विकसित होता है, जिसमें काव्यात्मक भाषा, प्रतीकात्मकता और गहन दार्शनिकता का समावेश है। 'अंधायुग' में पात्रों का चित्रण यथार्थवादी न होकर प्रतीकात्मक है, जिससे वे सार्वकालिक और सार्वभौमिक अर्थ ग्रहण करते हैं। यह कृति युद्ध, नैतिक पतन, अस्तित्वगत संकट और मानवीय मूल्यों के विघटन जैसे विषयों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है, जिससे यह केवल साहित्यिक रचना न रहकर एक दार्शनिक दस्तावेज बन जाती है। साथ ही, 'अंधायुग' ने हिंदी नाटक को नई दिशा प्रदान की, जहाँ मिथक का प्रयोग समकालीन समस्याओं की अभिव्यक्ति के लिए किया गया। इसकी भाषा की काव्यात्मकता, संवादों की गंभीरता और संरचना की सघनता इसे विशिष्ट बनाती है। इस प्रकार, 'अंधायुग' हिंदी साहित्य में न केवल एक महत्वपूर्ण नाट्यकृति है, बल्कि यह आधुनिक युग के नैतिक और सांस्कृतिक संकट का गहन साहित्यिक प्रतिरूप भी है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

महाभारत और आधुनिकता का संबंध

महाभारत और आधुनिकता के बीच संबंध अत्यंत गहरा और बहुआयामी है, क्योंकि यह महाकाव्य केवल प्राचीन भारतीय इतिहास या मिथकीय आख्यान भर नहीं है, बल्कि मानव जीवन के सार्वकालिक नैतिक, सामाजिक और दार्शनिक प्रश्नों का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत करता है। आधुनिक युग, जो विज्ञान, तकनीक और तर्कशीलता पर आधारित है, वहाँ भी मनुष्य के सामने नैतिक द्वंद्व, सत्ता-संघर्ष, हिंसा, और अस्तित्वगत संकट जैसी समस्याएँ यथावत बनी हुई हैं—जिनका सशक्त चित्रण महाभारत में मिलता है। इस प्रकार, महाभारत आधुनिक समाज के लिए एक दर्पण का कार्य करता है, जहाँ व्यक्ति धर्म और अधर्म, न्याय और अन्याय, तथा कर्तव्य और स्वार्थ के बीच निरंतर संघर्ष करता है। धर्मवीर भारती ने अपने नाट्यकाव्य अंधायुग में इसी संबंध को पुनर्पाठ के माध्यम से उजागर किया है, जहाँ महाभारत के युद्धोत्तर प्रसंग को आधुनिक विश्वयुद्ध और सामाजिक विघटन से जोड़ा गया है। आधुनिकता की जटिलताओं—जैसे नैतिक मूल्यहीनता, राजनीतिक अनैतिकता और मानव संबंधों का विघटन—को समझने के लिए महाभारत एक प्रासंगिक स्रोत बन जाता है। अतः महाभारत और आधुनिकता का संबंध यह सिद्ध करता है कि युग बदलते हैं, परंतु मानवीय प्रवृत्तियाँ और उनके संकट स्थायी रहते हैं, जिससे यह महाकाव्य आज भी उतना ही अर्थपूर्ण और प्रासंगिक है जितना अपने समय में था।

साहित्य समीक्षा

उपलब्ध साहित्य में धर्मवीर भारती के अंधायुग को आधुनिक हिंदी नाटक के एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में देखा गया है, जहाँ महाभारत के आख्यान का पुनर्पाठ करते हुए समकालीन समाज की जटिलताओं को अभिव्यक्त किया गया है। बनर्जी (2018) ने धार्मिक सार्वभौमिकता और नैतिक चेतना के संदर्भ में भारतीय परंपरा को समझने का प्रयास किया है, जो 'अंधायुग' की वैचारिक पृष्ठभूमि को समझने में सहायक है। वहीं मिश्रा (2002) महाभारत के आधुनिक पुनर्पाठ को भारतीय साहित्यिक परंपरा के निरंतर विकास के रूप में देखते हैं, जहाँ मिथक स्थिर न होकर समयानुकूल पुनःव्याख्यायित होते हैं। गुप्ता (2012) ने विशेष रूप से 'अंधायुग' में मिथक और आधुनिकता के अंतर्संबंध को रेखांकित करते हुए यह स्थापित किया कि भारती ने पौराणिक कथा को आधुनिक सामाजिक यथार्थ के साथ जोड़कर एक नई साहित्यिक दृष्टि प्रस्तुत की। इस प्रकार, प्रारंभिक अध्ययन यह स्पष्ट करते हैं कि 'अंधायुग' केवल एक नाट्यकृति नहीं, बल्कि एक वैचारिक पुनर्संरचना है, जो अतीत और वर्तमान के बीच संवाद स्थापित करती है।

दूसरे स्तर पर, विद्वानों ने 'अंधायुग' को नैतिक संकट और अस्तित्वगत द्वंद्व के संदर्भ में विश्लेषित किया है। कुमार (2017) के अनुसार, स्वतंत्रता-उत्तर हिंदी नाटक में नैतिक मूल्य तेजी से विघटित होते दिखाई देते हैं, और 'अंधायुग' इस प्रवृत्ति का सशक्त उदाहरण है। इस कृति में पात्र अपने निर्णयों और उनके परिणामों के बीच फँसे हुए दिखाई देते हैं, जिससे अस्तित्ववादी संकट की अनुभूति होती है। सक्सेना (2014) ने भारती के नाटकों में नैतिकता और दार्शनिक दृष्टि का विश्लेषण करते हुए यह बताया कि 'अंधायुग' में धर्म-अधर्म की पारंपरिक अवधारणाएँ धुंधली हो जाती हैं और नैतिकता सापेक्ष रूप धारण कर लेती है। इसी प्रकार,

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

त्रिपाठी (2019) ने आधुनिक हिंदी नाटक में मिथकीय चेतना को सामाजिक यथार्थ से जोड़ते हुए यह तर्क दिया कि 'अंधायुग' में मिथक का प्रयोग केवल प्रतीकात्मक नहीं, बल्कि आलोचनात्मक है, जो समकालीन समाज की विसंगतियों को उजागर करता है। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि 'अंधायुग' को केवल साहित्यिक दृष्टि से नहीं, बल्कि दार्शनिक और नैतिक विमर्श के रूप में भी समझा जाना चाहिए।

तीसरे स्तर पर, शोधकर्ताओं ने 'अंधायुग' के शिल्प, संरचना और प्रतीकात्मकता पर विशेष ध्यान दिया है। गुप्ता (2012) और जोशी (2015) दोनों यह मानते हैं कि इस कृति में मिथकीय संरचना को आधुनिक नाटकीय शिल्प के साथ संयोजित किया गया है, जिससे यह एक विशिष्ट गीतिनाट्य के रूप में उभरती है। जोशी (2015) ने महाभारत के पुनर्पाठ को एक सांस्कृतिक पुनर्संरचना के रूप में देखा है, जहाँ परंपरा को आधुनिक दृष्टि से पुनर्परिभाषित किया जाता है। 'अंधायुग' की भाषा, प्रतीक और बिंब योजना पर भी विशेष अध्ययन किए गए हैं, जिनमें यह स्पष्ट हुआ है कि नाटक की काव्यात्मकता उसकी प्रभावशीलता को बढ़ाती है। सक्सेना (2014) के अनुसार, भारती की भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि भाव और विचार की गहन अभिव्यक्ति है। इस प्रकार, शिल्पगत अध्ययन यह दर्शाते हैं कि 'अंधायुग' का महत्व केवल उसके विषय में नहीं, बल्कि उसकी प्रस्तुति और अभिव्यक्ति की शैली में भी निहित है।

अंततः, उपलब्ध साहित्य यह संकेत करता है कि 'अंधायुग' आधुनिक समाज की आलोचना का एक सशक्त माध्यम है, परंतु इसमें कुछ शोध-रिक्तताएँ भी विद्यमान हैं। अधिकांश अध्ययन नैतिक संकट, मिथकीय पुनर्पाठ और दार्शनिक आयामों पर केंद्रित हैं, परंतु समकालीन राजनीतिक संदर्भ, मीडिया की भूमिका और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में इसकी प्रासंगिकता पर अपेक्षाकृत कम कार्य हुआ है। जोशी (2015) और कुमार (2017) ने यद्यपि आधुनिक संदर्भों की ओर संकेत किया है, फिर भी एक समग्र विश्लेषण की आवश्यकता बनी हुई है, जो 'अंधायुग' को 21वीं सदी के सामाजिक-राजनीतिक विमर्श से जोड़ सके। इस प्रकार, प्रस्तुत अध्ययन इन शोध-रिक्तताओं को भरने का प्रयास करता है, जहाँ महाभारत के पुनर्पाठ के माध्यम से आधुनिक समाज की नैतिक एवं दार्शनिक व्याख्या को व्यापक और समकालीन दृष्टिकोण से समझा जाएगा।

धर्मवीर भारती और 'अंधायुग'

1. धर्मवीर भारती का साहित्यिक व्यक्तित्व

धर्मवीर भारती हिंदी साहित्य के प्रमुख साहित्यकारों में से एक हैं, जिनकी रचनाएँ गहन संवेदनशीलता, दार्शनिक दृष्टि और काव्यात्मक अभिव्यक्ति के लिए जानी जाती हैं। उन्होंने साहित्य को केवल मनोरंजन का माध्यम न मानकर सामाजिक और नैतिक चिंतन का उपकरण बनाया। उनकी लेखनी में आधुनिक जीवन के संकटों, मानवीय मूल्यों और अस्तित्वगत प्रश्नों की स्पष्ट झलक मिलती है।

2. 'अंधायुग' की रचना-परिस्थिति (विभाजन और युद्धोत्तर संदर्भ)

अंधायुग की रचना उस समय हुई जब भारत विभाजन और द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद समाज गहरे आघात, हिंसा और नैतिक विघटन से गुजर रहा था। इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ने कृति को एक गहरी सामाजिक और

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

दार्शनिक प्रासंगिकता प्रदान की, जहाँ युद्ध के परिणामस्वरूप उत्पन्न अंधकार और निराशा को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया।

3. कृति की संरचना एवं कथानक

यह कृति महाभारत के अठारहवें दिन की संध्या से आरंभ होती है और युद्धोत्तर स्थिति का चित्रण करती है। 'अंधायुग' एक गीतिनाट्य है, जो पाँच अंकों में विभाजित है, जिसमें घटनाओं की अपेक्षा भावनाओं, संवादों और दार्शनिक चिंतन को अधिक महत्व दिया गया है।

4. प्रमुख पात्रों का परिचय

इस नाटक में अश्वत्थामा, धृतराष्ट्र, गांधारी, संजय और कृष्ण जैसे पात्रों के माध्यम से मानवीय प्रवृत्तियों का गहन विश्लेषण किया गया है। ये पात्र केवल पौराणिक नहीं, बल्कि आधुनिक समाज के प्रतीक बन जाते हैं, जो हिंसा, प्रतिशोध, अंधता, नैतिक द्वंद्व और चेतना का प्रतिनिधित्व करते हैं।

नैतिक मूल्य संकट का चित्रण

1. युद्धोत्तर नैतिक पतन

अंधायुग में महाभारत के युद्ध के पश्चात् उत्पन्न परिस्थितियों को नैतिक पतन के रूप में चित्रित किया गया है। विजय के बावजूद समाज में शांति, संतुलन और नैतिकता का अभाव दिखाई देता है। युद्ध केवल भौतिक विनाश तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह मानवीय संवेदनाओं, विश्वास और मूल्यों को भी नष्ट कर देता है, जिससे समाज एक गहरे अंधकार में डूब जाता है।

2. धर्म-अधर्म की द्वंद्वात्मकता

इस कृति में धर्म और अधर्म के बीच स्पष्ट विभाजन समाप्त होता दिखाई देता है। पात्र अपने-अपने दृष्टिकोण से स्वयं को सही ठहराते हैं, जिससे नैतिक सत्य सापेक्ष बन जाता है। धर्मवीर भारती ने यह दिखाया है कि आधुनिक समाज में भी धर्म और अधर्म की सीमाएँ धुंधली हो जाती हैं, जहाँ व्यक्ति अपने स्वार्थ के अनुसार नैतिकता को परिभाषित करता है।

3. सत्ता, स्वार्थ और मूल्यहीनता

'अंधायुग' में सत्ता प्राप्ति की लालसा और व्यक्तिगत स्वार्थ को नैतिक मूल्यों के पतन का प्रमुख कारण बताया गया है। सत्ता के लिए संघर्ष करते हुए पात्र अपने कर्तव्यों और नैतिक सीमाओं को भूल जाते हैं, जिससे समाज में मूल्यहीनता फैलती है। यह स्थिति आधुनिक राजनीतिक और सामाजिक संरचनाओं का भी सटीक प्रतिबिंब प्रस्तुत करती है।

4. मानवीय मर्यादा का विघटन

नाटक में मानवीय मर्यादा और आदर्शों का पूर्णतः विघटन दिखाई देता है। हिंसा, प्रतिशोध और क्रूरता के कारण व्यक्ति अपनी नैतिक पहचान खो देता है। इस प्रकार, 'अंधायुग' यह स्पष्ट करता है कि जब समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास होता है, तब मानवीय गरिमा और सभ्यता भी संकट में पड़ जाती है, जो आधुनिक युग की एक गंभीर समस्या है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

दार्शनिक व्याख्या

1. अस्तित्ववाद और निरर्थकता का बोध

अंधायुग में युद्धोत्तर परिदृश्य के माध्यम से जीवन की निरर्थकता और अस्तित्वगत संकट का गहरा बोध व्यक्त होता है, जो अस्तित्ववाद की मूल अवधारणाओं से जुड़ा है। पात्र अपने कर्मों के परिणामों से जूझते हुए जीवन के अर्थहीन हो जाने का अनुभव करते हैं। युद्ध के बाद का शून्य और निराशा इस बात को दर्शाते हैं कि जब नैतिक आधार टूट जाते हैं, तो अस्तित्व भी संकटग्रस्त हो जाता है।

2. कर्म, नियति और उत्तरदायित्व

इस कृति में कर्म और नियति के बीच गहरे संबंध को स्पष्ट किया गया है। पात्र अपने कर्मों के लिए उत्तरदायी होते हुए भी नियति के जाल में बंधे दिखाई देते हैं। धर्मवीर भारती यह संकेत करते हैं कि मनुष्य अपने निर्णयों से भाग नहीं सकता और उसे उनके परिणामों का सामना करना ही पड़ता है, जिससे नैतिक उत्तरदायित्व का प्रश्न उभरता है।

3. आस्था बनाम अनास्था

'अंधायुग' में आस्था और अनास्था के बीच गहरा द्वंद्व दिखाई देता है। एक ओर कृष्ण जैसे पात्र आस्था, धैर्य और मार्गदर्शन का प्रतीक हैं, वहीं अन्य पात्र निराशा और विश्वासहीनता से ग्रस्त हैं। यह द्वंद्व आधुनिक समाज की मानसिक स्थिति को दर्शाता है, जहाँ पारंपरिक विश्वास कमजोर पड़ते जा रहे हैं।

4. जीवन-दर्शन और मानवीय पीड़ा

कृति में जीवन को एक संघर्षपूर्ण यात्रा के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसमें पीड़ा, संघर्ष और त्रासदी अनिवार्य तत्व हैं। महाभारत के संदर्भ में यह पीड़ा केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामूहिक भी है। इस प्रकार, 'अंधायुग' मानवीय पीड़ा को दार्शनिक दृष्टि से समझाते हुए यह स्थापित करता है कि जीवन की वास्तविकता संघर्ष और जिम्मेदारी के स्वीकार में निहित है।

पात्रों के माध्यम से आधुनिक समाज का प्रतिबिंब

1. अश्वत्थामा: हिंसा और प्रतिशोध का प्रतीक

अंधायुग में अश्वत्थामा को अंधी हिंसा और प्रतिशोध की प्रवृत्ति का प्रतिनिधि बनाया गया है। महाभारत के इस पात्र को भारती ने आधुनिक मनुष्य के उस रूप में प्रस्तुत किया है, जो क्रोध और बदले की भावना में अपनी नैतिक सीमाओं को खो देता है। अश्वत्थामा की क्रूरता यह दर्शाती है कि प्रतिशोध अंततः विनाश को ही जन्म देता है।

2. संजय: तटस्थता और नैतिक द्वंद्व

संजय का चरित्र तटस्थ दृष्टा के रूप में सामने आता है, जो घटनाओं को देखता और वर्णित करता है, परंतु हस्तक्षेप नहीं करता। धर्मवीर भारती ने संजय के माध्यम से आधुनिक समाज के उस वर्ग को चित्रित किया है, जो अन्याय और अनैतिकता को देखते हुए भी निष्क्रिय बना रहता है। यह तटस्थता स्वयं एक नैतिक संकट को जन्म देती है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

3. धृतराष्ट्र और गांधारी: अंधत्व और सत्ता

धृतराष्ट्र और गांधारी का अंधत्व केवल शारीरिक नहीं, बल्कि नैतिक और मानसिक अंधता का प्रतीक है। ये पात्र सत्ता, मोह और पक्षपात के कारण सत्य को स्वीकार नहीं कर पाते। इनके माध्यम से यह दिखाया गया है कि जब शासक वर्ग नैतिक दृष्टि खो देता है, तो समाज में अराजकता और अन्याय बढ़ता है।

4. कृष्ण: दार्शनिक चेतना और नियति

कृष्ण का चरित्र नाटक में दार्शनिक चेतना, मार्गदर्शन और नियति के प्रतीक के रूप में उभरता है। वे मानव जीवन के गहरे सत्य—कर्म, धर्म और उत्तरदायित्व—की ओर संकेत करते हैं। इस प्रकार, कृष्ण आधुनिक समाज में नैतिक दिशा और आध्यात्मिक संतुलन के प्रतिनिधि के रूप में स्थापित होते हैं, जो अंधकार में भी मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

युद्ध और मानवता: समकालीन संदर्भ

1. विश्वयुद्ध और 'अंधायुग'

अंधायुग में चित्रित युद्धोत्तर अंधकार को द्वितीय विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि में समझा जा सकता है, जहाँ व्यापक विनाश, मानवीय हानि और नैतिक मूल्यों का पतन देखने को मिला। धर्मवीर भारती ने महाभारत के प्रसंगों के माध्यम से यह संकेत किया कि युद्ध किसी भी युग में मानवता को गहरे संकट में डाल देता है और उसका प्रभाव केवल तत्कालिक नहीं, बल्कि दीर्घकालिक होता है।

2. विभाजन की त्रासदी और सामाजिक विघटन

भारत के भारत विभाजन ने सामाजिक ताने-बाने को गहराई से प्रभावित किया, जहाँ हिंसा, विस्थापन और अविश्वास ने मानव संबंधों को तोड़ दिया। 'अंधायुग' में यह विघटन महाभारत के युद्धोत्तर समाज के माध्यम से प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत होता है, जहाँ मानवता अपने ही कर्मों के परिणामों से जूझती दिखाई देती है।

3. आधुनिक राजनीति और नैतिक अंधता

नाटक में सत्ता और राजनीति को नैतिक अंधता के रूप में चित्रित किया गया है, जहाँ शासक वर्ग अपने स्वार्थ और महत्वाकांक्षाओं के कारण सही-गलत का भेद खो देता है। महाभारत के पात्रों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि जब राजनीति नैतिकता से विहीन हो जाती है, तब समाज में अराजकता और अन्याय का विस्तार होता है, जो आधुनिक राजनीतिक परिदृश्य से भी मेल खाता है।

4. हिंसा और मानव अस्तित्व का संकट

'अंधायुग' यह दर्शाता है कि निरंतर हिंसा और संघर्ष मानव अस्तित्व के लिए गंभीर संकट उत्पन्न करते हैं। युद्ध के परिणामस्वरूप केवल शारीरिक विनाश नहीं होता, बल्कि मानसिक, नैतिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार, यह कृति आधुनिक समाज को यह चेतावनी देती है कि यदि हिंसा और प्रतिशोध की प्रवृत्तियाँ नियंत्रित न की जाएँ, तो मानवता स्वयं अपने अस्तित्व को संकट में डाल सकती है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

'अंधायुग' की प्रतीकात्मकता और शिल्प

1. प्रतीक और बिंब योजना

अंधायुग में प्रतीकों और बिंबों का अत्यंत सशक्त और बहुस्तरीय प्रयोग हुआ है। 'अंधकार' स्वयं पूरे नाटक का केंद्रीय प्रतीक है, जो नैतिक पतन, मानसिक भ्रम और सामाजिक विघटन को व्यक्त करता है। महाभारत के युद्धोत्तर परिदृश्य को बिंबात्मक रूप में प्रस्तुत करते हुए लेखक ने विनाश, शून्यता और निराशा की अनुभूति को गहनता से व्यक्त किया है। पात्र, घटनाएँ और परिवेश सभी प्रतीकात्मक अर्थ ग्रहण कर लेते हैं, जिससे कृति का अर्थ-क्षेत्र विस्तृत हो जाता है।

2. भाषा की काव्यात्मकता

इस कृति की भाषा अत्यंत काव्यात्मक, गेय और भावप्रधान है, जो इसे सामान्य नाटकों से अलग बनाती है। धर्मवीर भारती ने भाषा में अलंकारिकता, लयात्मकता और गहन संवेदनात्मक अभिव्यक्ति का समावेश किया है। संवादों में काव्यात्मक गहराई होने के कारण नाटक केवल कथानक तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह एक भावानुभूति का सृजन करता है।

3. नाटकीय संरचना और शैली

'अंधायुग' की संरचना पारंपरिक नाट्यशैली से भिन्न है। इसमें घटनाओं की अपेक्षा मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक तत्वों को अधिक महत्व दिया गया है। नाटक पाँच अंकों में विभाजित है, और इसकी शैली गहन, गंभीर तथा चिंतनशील है। इसमें कथानक की गति अपेक्षाकृत धीमी है, परंतु विचारों की तीव्रता अत्यधिक है, जो पाठक और दर्शक को गहराई से प्रभावित करती है।

4. गीतिनाट्य की विशेषताएँ

यह कृति एक गीतिनाट्य (Verse Play) के रूप में विशिष्ट है, जिसमें काव्य और नाटक का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। इसमें गीतात्मक अंश, लयात्मक संवाद और भावात्मक अभिव्यक्ति प्रमुख हैं, जो नाटक को सौंदर्यात्मक ऊँचाई प्रदान करते हैं। इस प्रकार, 'अंधायुग' का शिल्प न केवल उसकी विषयवस्तु को प्रभावी बनाता है, बल्कि उसे हिंदी साहित्य में एक अद्वितीय कृति के रूप में स्थापित करता है।

आधुनिक समाज की आलोचना

1. मूल्यहीनता और सामाजिक विघटन

अंधायुग में आधुनिक समाज की सबसे बड़ी समस्या के रूप में मूल्यहीनता और सामाजिक विघटन को रेखांकित किया गया है। महाभारत के युद्धोत्तर संदर्भ के माध्यम से यह दिखाया गया है कि जब नैतिक मूल्यों का ह्रास होता है, तब समाज में अविश्वास, अस्थिरता और विघटन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। व्यक्ति अपने स्वार्थ में इतना लिप्त हो जाता है कि सामूहिक हित और मानवीय संबंधों का महत्व समाप्त होने लगता है।

2. सत्ता-राजनीति का अनैतिक स्वरूप

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

इस कृति में सत्ता और राजनीति को नैतिकता से विमुख एक शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। धर्मवीर भारती ने यह स्पष्ट किया है कि सत्ता प्राप्ति की लालसा व्यक्ति को नैतिक सीमाओं से विचलित कर देती है। परिणामस्वरूप राजनीति अनैतिकता, छल और स्वार्थ का माध्यम बन जाती है, जो आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था की वास्तविकताओं को उजागर करती है।

3. मीडिया और नैतिक जिम्मेदारी (संजय के संदर्भ में)

संजय का चरित्र आधुनिक मीडिया का प्रतीक माना जा सकता है, जो घटनाओं का साक्षी और प्रसारक तो है, परंतु नैतिक हस्तक्षेप से दूर रहता है। यह स्थिति आज के मीडिया जगत की उस प्रवृत्ति को दर्शाती है, जहाँ निष्पक्षता के नाम पर संवेदनहीनता और निष्क्रियता को स्वीकार कर लिया जाता है। इस प्रकार, कृति मीडिया की नैतिक जिम्मेदारी पर भी गंभीर प्रश्न उठाती है।

4. इतिहास की पुनरावृत्ति का सिद्धांत

'अंधायुग' यह संकेत करता है कि यदि समाज अपने अतीत से सीख नहीं लेता, तो इतिहास स्वयं को दोहराता है। महाभारत का युद्ध और उसके परिणाम आधुनिक युग के संघर्षों से मेल खाते हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि मानवीय प्रवृत्तियाँ और उनकी त्रुटियाँ समय के साथ बदलती नहीं हैं। इस प्रकार, यह कृति आधुनिक समाज को चेतावनी देती है कि नैतिकता और विवेक के अभाव में वही विनाशकारी परिस्थितियाँ पुनः उत्पन्न हो सकती हैं।

निष्कर्ष

धर्मवीर भारती के नाट्यकाव्य अंधायुग का समग्र अध्ययन यह स्थापित करता है कि महाभारत का पुनर्पाठ केवल पौराणिक आख्यान का पुनरुत्थान नहीं, बल्कि आधुनिक समाज के नैतिक, सामाजिक और दार्शनिक संकटों की सशक्त व्याख्या है। इस कृति में महाभारत के युद्धोत्तर परिदृश्य को केंद्र में रखकर उस अंधकारमय स्थिति का चित्रण किया गया है, जहाँ विजय और पराजय दोनों ही मानवीय मूल्यों के विघटन में परिणत होते हैं। भारती ने यह स्पष्ट किया है कि युद्ध का वास्तविक प्रभाव भौतिक विनाश से कहीं अधिक गहरा होता है, क्योंकि यह मनुष्य की आस्था, नैतिकता और सामाजिक संतुलन को भीतर से तोड़ देता है। 'अंधायुग' के पात्र—अश्वत्थामा, धृतराष्ट्र, गांधारी, संजय और कृष्ण—आधुनिक मानव की विविध मानसिक अवस्थाओं और प्रवृत्तियों का प्रतीक बनकर उभरते हैं, जो हिंसा, प्रतिशोध, अंधता, तटस्थता और दार्शनिक चेतना को अभिव्यक्त करते हैं। दार्शनिक दृष्टि से यह कृति अस्तित्ववाद, कर्म, नियति और उत्तरदायित्व जैसे प्रश्नों को गहराई से संबोधित करती है और यह दर्शाती है कि मनुष्य अपने कर्मों के परिणामों से बच नहीं सकता। साथ ही, यह नाटक आधुनिक समाज की मूल्यहीनता, राजनीतिक अनैतिकता और सामाजिक विघटन की तीखी आलोचना प्रस्तुत करता है। इस प्रकार, 'अंधायुग' न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह आधुनिक मानव के लिए एक चेतावनी और मार्गदर्शन भी प्रदान करता है कि यदि नैतिक मूल्यों, मानवीय संवेदनाओं और जिम्मेदारी की भावना को बनाए नहीं रखा गया, तो समाज पुनः उसी अंधकार में डूब सकता है, जिसका चित्रण इस कृति में किया गया है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

संदर्भ

1. बनर्जी, एस. (2018). स्वामी विवेकानंद और सार्वभौमिक धर्म का विचार. Journal of Religious Studies, 45(2), 120–135.
2. भारती, डी. (2010). अंधा युग. राजकमल प्रकाशन. (मूल कृति 1954 में प्रकाशित)
3. मिश्रा, वी. (2002). महाभारत का आधुनिक पुनर्पाठ और भारतीय साहित्यिक परंपरा। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. सक्सेना, आर. (2014). धर्मवीर भारती के नाटकों में नैतिकता और दार्शनिक दृष्टि। हिंदी अध्ययन पत्रिका, 22(1), 66–78।
5. त्रिपाठी, एस. (2019). आधुनिक हिंदी नाटक में मिथकीय चेतना और सामाजिक यथार्थ। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हिंदी रिसर्च, 5(3), 101–107।
6. गुप्ता, एस. (2012). हिंदी नाटक में मिथक और आधुनिकता: धर्मवीर भारती के 'अंधा युग' का एक अध्ययन. Indian Literature, 56(4), 89–102.
7. जोशी, पी. (2015). आधुनिक भारतीय साहित्य में महाभारत की पुनर्व्याख्या. Journal of South Asian Studies, 38(3), 421–435.
8. कुमार, आर. (2017). स्वतंत्रता-पश्चात हिंदी नाटक में नैतिक संकट और अस्तित्वगत दुविधाएँ. Literary Insight, 8(1), 55–68.
9. सिंह, एन. (2016). हिंदी साहित्य में आधुनिक अभिव्यक्ति के एक साधन के रूप में मिथक। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंस, 6(5), 112–118.
10. थापर, आर. (2002). हमारे सामने का अतीत: प्रारंभिक उत्तरी भारत की ऐतिहासिक परंपराएँ। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
11. वर्मा, ए. (2021). आधुनिक हिंदी नाटक के दार्शनिक आयाम। रिसर्च जर्नल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंसेज़, 12(3), 145–152.
12. विलियम्स, आर. (2001). लंबी क्रांति। ब्रॉडव्यू प्रेस।
13. ज़ैदी, ए. (2020). युद्धोत्तर साहित्य में हिंसा और नैतिकता का निरूपण। कंटेम्पररी लिटरेरी रिव्यू इंडिया, 7(1), 77–91.
14. दुबे, ए. (2016). धर्मवीर भारती के साहित्य में सामाजिक चेतना और आधुनिकता। हिंदी समीक्षा, 28(2), 54–62।
15. श्रीवास्तव, पी. (2020). अंधयुग का दार्शनिक और सांस्कृतिक विश्लेषण। जर्नल ऑफ हिंदी लिटरेचर, 10(1), 88–96।